जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

श्री वासुपूज्य विधान

मंगल आशीर्वाद

आचार्य 108 श्री सन्मतिसागर जी महाराज

रचयित्री

परम पूज्य विदुषी लेखिका

आर्यिकारत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति साहित्य प्रकाशन समिति,

दिल्ली

श्री वासुपूज्य विधान

माण्डला

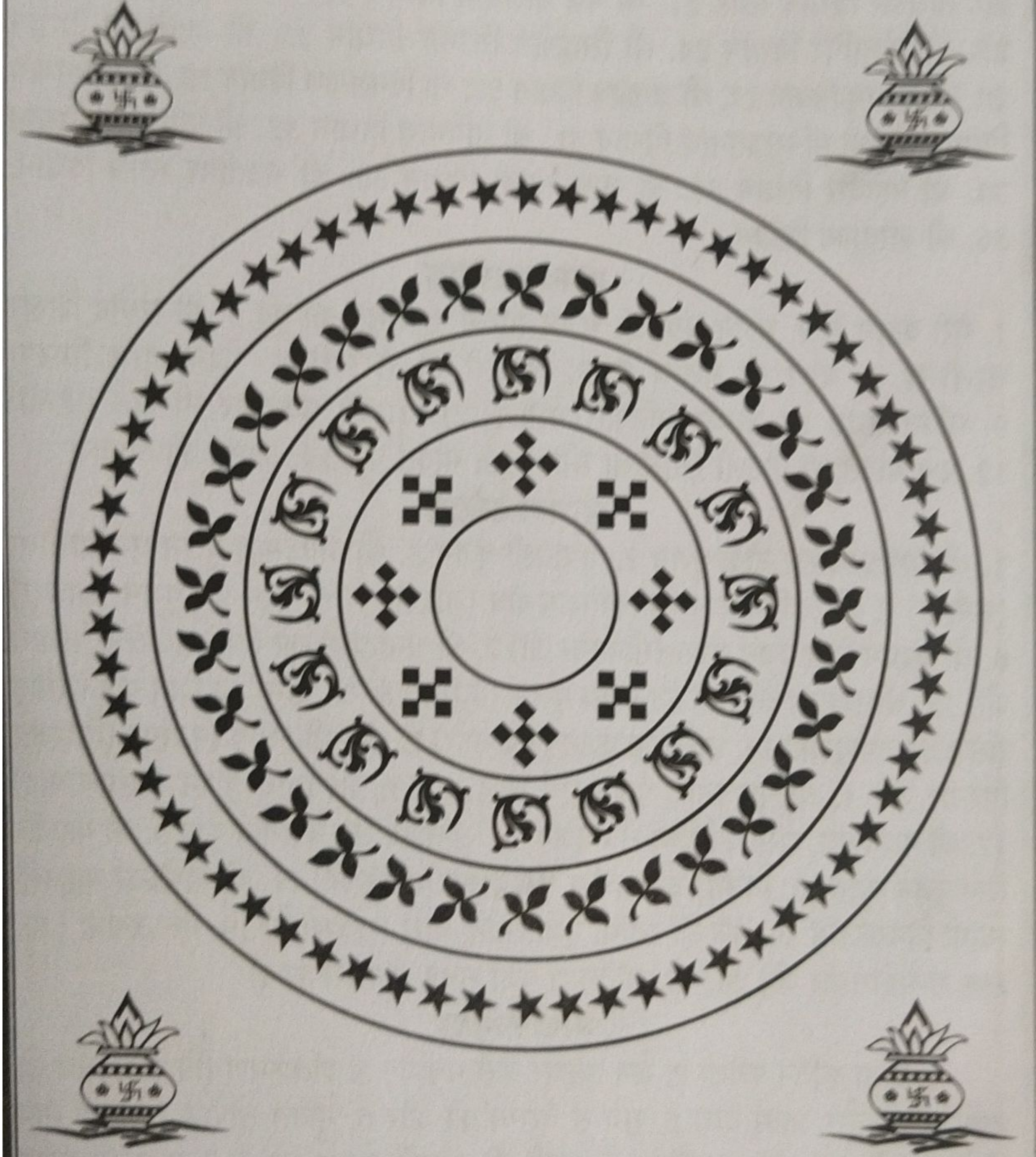

श्री वासुपूज्य विधान

गीता छंद

ज्ञानी बने ध्यानी बने, कर्मों को नश भगवन बने।
आनंद पाया, सौख्य छाया, मुक्ति नाथ भी तुम बने।।,
श्री वासुपूज्य ने भू पे सारी, ज्ञान धन फैलाया है।
हमको मिले, बगिया खिले, पाने भगत ये आया है।

दोहा

वासुपूज्य भगवान का, ध्यान करें दिन रैन।
भक्ति श्रद्धा पूजा से, मन में आवे चैन।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

स्थापना

गीता छंद (प्रभू पतित पावन......)

हम तो अनादि से भूल करते, भूल अब भी हो रही।
यह मनुज का जो तन मिला, तो भूल को कर ले सही।।
कामना तज साधना के, रास्ते पर जाना है।
हे वासुपूज्य प्रभु जी मेरे, शरण तेरी आना है।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पापों की अग्नि नित तपाये, तृष्णा संग दुख देती है।
शीतल हमारा मन ये होवे, भक्ति जल बन जाती है।।

कामना तज साधना के, रास्ते पर जाना है।
हे वासुपूज्य प्रभु जी मेरे, शरण तेरी आना है।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

क्षण-क्षण प्रतिक्षण मृत्यु होती, सांस लेकर छोड़ते।
अक्षय पदों की आश लाया, जग से अब मुंह मोड़ते।।
कामना तज.......

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

रंगीन फूलों के बीच में रह, ना स्वयं को देखा है।
आतम की खुशबू पाऊँ मैं, भक्ति से तुमको देखा है।।
कामना तज ....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

आतम का भोजन रत्नत्रय है, अब तक न मैनें कीना है।
बाहर के स्वादों में हूँ उलझा, इससे ही कष्ट को लीना है।
कामना तज ....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

अपने ही द्वारा मैं स्वयं, आतम में तम को कर रहा।
यदि धर्म दीपक जल उठे, तो निज प्रकाशित हो रहा।।
कामना तज....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्व. स्वाहा।

कर्मो ने कर्मो को बुलाया, कर्मो को ना रोका है।
कैसे जगत से पार होवें, मनुज भव ही मौका है।।
कामना तज....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्व. स्वाहा।

पाप का फल दुःख है, औ पुण्य का फल सुःख है।
दोनों को तज मुक्ति चलें, आनंद ही आनंद है।।
कामना तज.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व. स्वाहा।

मन की मैली चादरों को, भक्ति जल से धोयेंगे।
उज्जवल हो पावन मन हमारा, पाप बीज न बोयेंगे।।
कामना तज.....

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय निर्व. स्वाहा।

प्रथम वलय

शंभू छंद

अज्ञान की नींद हम सोये हैं, ज्ञानी खुद को माना करते।
यह भ्रम हट जाये मन से मेरे, इसलिए शरण तेरी आते।।
ज्ञानावरणी करमों को नसा, सच्चे शुभ ज्ञान को पाना है।
हे वासुपूज्य भगवान तेरे, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आतम से आतम दर्श करूँ, आतम में लीन ही हो जाऊँ।
कुछ और देखने का मन ना, निज ध्यान लीन मैं हो जाऊँ।।
क्षायिक सम्यक्त्व के धारी जिन, तेरे दर्शन को आये हैं।
हे वासुपूज्य वसु पूज्य प्रभो, चरणों में अर्घ्य चढ़ाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुख पाने की इच्छायें ही, दुख साथ में लेकर आती हैं।
सुख-दुख का दाता वेदनीय, यह बात समझ न आती हैं।।

शुभ का फल शुभ ही होता है, शुभ पूजा करने आये हैं।
हे वासुपूज्य आनंददायी, हम दुःख मिटाने आये हैं।। ३।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ने मोहित मुझे किया, मोही बन जग में घूम रहा।
मकड़ी के जाल सा फंसा रहा, आंखें खोली पर सोता रहा।।
इस मोहनीय से मोह हटा, हमें वीतरागता पाना है।
हे वासुपूज्य भगवान हमें, अब शरण में तेरी आना है।। ४।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में जहां गया, आयु की जेल भी वहाँ मिली।
दुख के बादल बरसे हम पर, आनंद की कलियाँ नहीं खिली।
इस जेल से मुक्ति पाने को, प्रभु पूजा तेरी करते हैं।
हे वासुपूज्य भगवान मेरे, हम अर्घ्य समर्पित करते हैं।। ५।।

ॐ ह्रीं आयुकर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

तन की रचना भी कर्म करें, कर्मों का फल तन पाया है।
शुभ से शुभ अशुभ से अशुभ मिले, यह आज समझ में आया है।
तन में मन सदा ही रहता है, अब आतम ध्यान लगाना है।
हे वासुपूज्य हम बे तन हो, चेतन साम्राज्य को पाना है।। ६।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

कभी उच्च कुली कभी निम्न कुली, ये गोत्र कर्म ने कीना था।
तेरे कुल का मैं वासी बनूं, अब भाव ये मन में लीना था।
शुभ भाव की ज्योति जग जाये, यह भाव साथ में लाया हूँ।
हे वासुपूज्य भगवान तुम्हें, भावों से शीश झुकाया हूँ।। ७।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

जब-जब मैं धर्म के कार्य करूँ, बाधायें बीच में आती है।
अच्छे शुभ कार्य ही रह जाते, यह बात न मन को भाती है।
इस अंतराय को दूर करो, शुभ कार्य हमें अब करना है।
श्री वासुपूज्य की भक्ति कर, भव सागर हमको तरना है।। ८।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य
दोहा

अष्ट कर्म के बीच में, आतम कष्ट को पाये।
कर्म मुक्त मैं भी बनूं, इससे अर्घ्य चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशनाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय प्रथम वलये अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलय

चाल छंद

सम्यग्दर्शन जब पाया, दर्शन में विशुद्धि लाया।
सच्चाई जग की जानें, आतम की बात वे मानें।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन गुण प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जो विनय महागुण धारे, संसार भी उससे हारे।
ज्ञानी की विनय जो करते, वे सर्व गुणों से भरते।।२।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शुभ शील का करो सम्मान, औ शील से हो निर्वाण।
मैं शील भावना भाऊँ, निज आत्म शील प्रगटाऊँ।।३।।

ॐ ह्रीं निरतिचार शीलव्रत प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शुभ ज्ञान अभीक्षण पाना, निज ज्ञान की ज्योति जलाना।
भव सागर पार करोगे, इससे ही मुक्ति वरोगे।।४।।

ॐ ह्रीं अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

संसार शरीर और भोग, ये आतम के हैं रोग।
संवेग भावना भाओ, निज आत्म से प्रेम बढ़ाओ।।५।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जो मुक्ति पथ में बाधक, कर त्याग बनो तुम साधक।
मन त्याग मार्ग में लागे, वह मुक्तिपुर को भागे।।६।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

तप से शक्ति बढ़ जाती, निज आत्म की ज्योति जलाती।
बिन तप ये कर्म न जावे, ना जीवन सफल बनावे।।७।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

साधु की संगत कीजे, निज गुण भंडार भरीजे।
साधु समाधि करवायें, अपनी समाधि भी पायें।।८।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

वैयावृत्ति भी करिये, साधु के रोग को हरिये।
सेवा से मेवा पाओ, इक दिन मुक्ति में जाओ।।९।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरण भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अरिहंत प्रभु की भक्ति, भक्ति से हो अभिव्यक्ति।
निर्मलता मन में लावें, सब पाप कर्म भग जावें।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ति भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मुक्ति पथ पर जो चलते, संग शिष्यों को ले जाते।
ऐसे आचार्य हमारे, चरणों में नमन तिहारे।।११।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

आगम अध्यात्म को पढ़ना, बहुश्रुत भक्ति भी करना।
जिनवाणी को पढ़ ज्ञानी, बनते आतम के ध्यानी।।१२।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

प्रवचन में वचन विशेष, और ज्ञान है मिलता अशेष।
प्रवचन भक्ति सुखदानी, सुख पाते हैं सब प्राणी।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

आवश्यक कार्य को करते, आलस प्रमाद ना करते।
तब सम्यक् दर्शन पाओ, मुक्तिपथ पर बढ़ जाओ।।१४।।

ॐ ह्रीं आवश्यक पारिहाणि भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

श्री देव शास्त्र गुरु ज्ञान, जग में फैलाते शान।
जिन धर्म प्रभावन करना, जिनवाणी घर-घर धरना।।१५।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

धर्मी से वात्सल्य होता, न द्वेष ईर्ष्या वो करता।
अपने सम सबको जाने, बस मुक्ति पथ को पाने।।१६।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

दोहा

सोलह कारण भावना, मुक्ति पथ ले लायें।
हम भी तीर्थकर बनें, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय द्वितीय वलये अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा

लाख बहात्तर आयु थी, वासुपूज्य भगवान।
सार्थक जीवन कर लिया, बारंबार प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं द्वि सप्तति आयु सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सत्तर धनुष ऊँचाई थी, वासु पूज्य भगवान।
ऊंचे बन ऊंचे उठे, बारंबार प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं सप्तति धनुष अवगाहना सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

लाल रंग शरीर का, आतम तो रंग हीन।
उसे पाये मुक्ति गये, निज आतम में लीन।।३।।

ॐ ह्रीं रक्त वर्ण काया सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

छयासठ गणधर थे वहां, वाणी खिरी अपार।
दिव्य ध्वनि सबने सुनी, हुआ आत्म उद्धार।।४।।

ॐ ह्रीं षट षष्ठि गणधर सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

वन मनोहर जायेकर, दीक्षा ली सुखदाय।
आतम ध्यान में लीन हुए, मस्तक नित्य झुकाय।।५।।

ॐ ह्रीं मनोहर दीक्षावन सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

नक्षत्र विशाखा उस घड़ी, चमके था चमकाय।
आभूषण अंबर तजे, दीक्षा ली सुखदाय।।६।।

ॐ ह्रीं दीक्षा समय विशाखा नक्षत्र सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

कदम्ब वृक्ष के नीचे जब, ध्यान लगाया आप।
केवल ज्ञान की ज्योति जगी, हरा करम संताप।।७।।

ॐ ह्रीं दीक्षावृक्ष कदम्ब सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

एक सहस दो सौ ग्यारह, चौदह पूर्वी ज्ञान।
चरण शरण में बैठते, बारंबार प्रणाम।।८।।

ॐ ह्रीं एकम् सहस द्विशतक एकादश चौदह पूर्वी ज्ञान सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शिक्षक शिक्षा देवते, समझें और समझायें।
ऐसे मुनिवर के चरण, मस्तक नित्य झुकायें।।९।।

ॐ ह्रीं शिक्षक मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अवधि ज्ञानी भी संग में, समवशरण स्थान।
वासुपूज्य को पूजते, बारंबार प्रणाम।।१०।।

ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानी मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

केवली प्रभु के साथ में, केवली संघ स्थान।
केवल हमको भी मिले, बारंबार प्रणाम।।११।।

ॐ ह्रीं केवली मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

विक्रिया धारी भी मुनि, प्रभु संग रहते पास।
वासु पूज्य भगवान का, उन पर आशीर्वाद।।१२।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धिधारी सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मनपर्यय ज्ञानी करें, प्रभु चरणों विश्राम।
वासु पूज्य भगवान का, लेवे निश दिन नाम।।१३।।

ॐ ह्रीं मनः पर्यय त्रद्धिधारी मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

समवशरण में वादी मुनि, प्रभु चरणों में आये।
वासुपूज्य की पूजा कर, मन में अति हर्षाए।।१४।।

ॐ ह्रीं वादी मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सहस बहात्तर कुल मुनि, करते चरण में वास।
ऐसे प्रभु को पूजे हम, दर्शन की हमें आश।।१५।।

ॐ ह्रीं द्वि सप्तति सहस कुल मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

आर्यिका प्रभु चरणों रहें, मन निर्मल हो जाय।
वासुपूज्य भगवान के, चरणन अर्घ्य चढ़ाय।।१६।।

ॐ ह्रीं आर्यिका सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

श्रावक प्रतिदिन आ रहे, प्रभु दर्शन के हेत।
जीवन सफल बना रहे, पाने मुक्ति खेत।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रावक सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

श्राविका प्रभु पूजा करें, भक्ति करें गुणगान।
हम भी भक्ति कर रहे, बारंबार प्रणाम।।१८।।

ॐ ह्रीं श्राविका सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

असंख्यात देव देवी, प्रभु-पूजा को आये।
नृत्य गान कर पूजते, चरणों शीश झुकाये।।१९।।

ॐ ह्रीं असंख्यात देव देवी भक्त सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

असंख्यात तिर्यंच भी, वाणी सुनने आये।
भव सुधरे उनका तभी, शत-शत शीश झुकाये।।२०।।

ॐ ह्रीं असंख्यात तिर्यंच भक्त सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

गिर मंदार पे आये के, योग निरोध था कीन।
कर्म नाश मुक्ति गये, स्वयं-स्वयं में लीन।।२१।।

ॐ ह्रीं मंदार गिर मोक्ष सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

संग साथ में अन्य मुनि, मुक्तिपुर को जायें।
कब आवे नंबर मेरा, आशा यही लगायें।।२२।।

ॐ ह्रीं मुक्ति गमन मुनि सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

ब्याह नहीं तुमने किया, देखा न संसार।
त्याग जगत दीक्षा धरी, मुक्ति को तैयार।।२३।।

ॐ ह्रीं बालब्रह्मचारी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

रत्नों की बारिश हुई, आये गर्भ में आप।
धन वैभव से पूर्ण हुये, नहीं रहा संताप।।२४।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठी दिने गर्भ मंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सूरज सम रोशन भया, भूमि का हर क्षेत्र।
जन्म हुआ जब आपका, खुला ज्ञान का नेत्र।।२५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

ना भाया संसार जब, लिया दिगम्बर भेष।
दीक्षा ले वन में चलें, जाने मुक्ति देश।।२६।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां तपमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

ज्ञान सवेरा हो गया, हुआ है केवल ज्ञान।
सुर नर जाकर पूजते, बारंबार प्रणाम।।२७।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल द्वितीयां केवल ज्ञान प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अष्ट कर्म से ले बिदा, पहुंचे शिवपुर धाम।
भक्त भक्ति तो कर रहे, मिले मुक्ति विश्राम।।२८।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

चौपाई

कर्म दर्शनावरण जु नाशा शुभ अनंत दर्शन का वासा।।
सम्यग्दर्शन हम भी पाये। इससे चरण में अर्घ्य चढ़ायें।।२९।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

ज्ञानावरण जो कर्म हटाया केवल ज्ञान का सूर्य उगाया।।
पूर्ण ज्ञान के हम अभिलाषी। तृप्त होय यह आतम प्यासी।।३०।।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मोहनीय की नींद से जागे मोहनीय सब कर्म थे भागे।।
सच्चा सुख आतम का पाया, अर्घ्य चढ़ाने भक्त ये आया।।३१।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

बाधाऐं सब दूर ही भागी जब से आप बने थे त्यागी।।
अंतराय को नाशा तुमने, आकर शीश झुकाया हमने।।३२।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

क्रोध कषायें छोड़ने, आये हम भगवान।
पूर्ण हमारी आश हो, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय तृतीय वलये अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

चतुर्थ वलय

गीता छंद (प्रभु पतित)

ईर्ष्या करें विद्वेष भी, और बैर संग में बांधते।
क्रोधादि कर सद्भाव छोड़ा, कर्म बंधन बांधते।।

उत्तम क्षमादि भाव धारण, कर धरम को पाना है।
शत्रु ना जग में कोई मेरा, भाव अब ये भाना है।।१।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अभिमान गर्व घमंड कर, हमने स्वयं को माना था।
पर बाह्य वस्तु में उलझ, निज आतम को न जाना था।।
उत्तम धरम मार्दव को धारण, करके मान गलाना है।
किस वस्तु पे अभिमान करूँ मैं, साथ कुछ ना जाना है।।२।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

छल से कपट से माया से, धोखा सदा देता रहा।
समझा कि दूजे को ठगा है, पर स्वयं ठगता रहा।।
उत्तम धरम आर्जव को धारण, कर सरल हमें बनना है।
माया की छाया को तजूँ, जीवन को सार्थक करना है।।३।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अपनी नहीं जो वस्तु है, पर लोभ अपना कहता है।
संग्रह परिग्रह का किया, और लीन उसमें रहता है।।
उत्तम धरम ये शौच धारण, करके आतम शुद्ध हो।
संतोष अमृत को पीऊँ, पीकर के आतम बुद्ध हो।।४।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मैं भूलकर बैठा स्वयं को, पर को अपना मानता।
यह भूल की है अनादि से ही, ना स्वयं को जानता।।
सत्यम् शिवम् सुन्दर है आतम, ध्यान इसका करना है।
सत्य सूर्य जो उदित होवे, कर्म तम को हरना है।।५।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जग की भौतिक वस्तुओं में, उलझ संयम ना लिया।
दिन रात भोगी बन रहा, संयम का पालन ना किया।।
मन वचन काय पे रखूँ संयम, भाव मन में आया है।
संयम बिना सुख ना मिले, संयम से ही सुख आया है।।६।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

धरती तपे अंबर तपे, तपता सकल संसार है।
तप से ही सोना शुद्ध हो, तपने में ही वो सार है।
तन को तपा मन को तपा, वचनों की भी शुद्धि करो।
बिन तप न आतम शुद्ध हो, तप करके ही मुक्ति वरो।।७।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अर्जन किया संग्रह किया, अब त्याग करना सीख लो।
जो कुछ हमारा है नहीं, उसे दूर करना सीख लो।।
उत्तम धरम है त्याग धारण, करके निज को पाना है।
त्यागी बनूँ तज राग को, हमको तो मुक्ति जाना है।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

किंचित भी मेरा कुछ नहीं है, यह अकिंचन है कहा।
मुनिराज इसको धारते, आतम के ध्यान में सुख लहा।।
उत्तम आकिंचन धारकर, एकत्व धर्म को पाना है।
उत्तम आकिंचन धर्मधारी, बन के मुक्ति जाना हैं।।९।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शील धर्म को धारकर, रक्षा भी इसकी करना है।
अपनी ही निर्मल आत्मा ध्या, औ कुशील को तजना है।।
भाव से ब्रम्हचर्य पालन, कर धरम को पाना है।

यह ही तो मुक्ति में ले जावे, निज ज्ञान में ही आना है।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रम्हचर्य धर्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

भुजंग प्रयात (तर्ज - नरेन्द्रं फनीन्द्रं)

श्री लक्ष्मी ने भी, चरण डेरा डाला।
चारों दिशा में, किया है उजाला।।
श्री वासुपूज्य की, पूजा रचाऊँ।
हरो कर्म मेरे, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।।११।।

ॐ ह्रीं शुद्ध बुद्धि प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सुरेश्वर महेश्वर जिनेश्वर कहाये।
सभी पूजते है सभी सिर झुकाये।।
श्री वासुपूज्य.........।।१२।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वर भक्ति प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

न मरती कभी ना, कभी जन्म होता।
है शाश्वत ये आतम, अमर बीज बोता।।
श्री वासुपूज्य..........।।१३।।

ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सबसे बड़े जग में, जग ज्येष्ठ स्वामी।
ईश्वर परम प्रभु, हो अंतर्यामी।।
श्री वासुपूज्य..........।।१४।।

ॐ ह्रीं जगज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पर की करो रक्षा, वात्सल्य धारी।
विपत्ति न आवे, सब होवे सुखारी।।
श्री वासुपूज्य ....।।१५।।

ॐ ह्रीं आत्म रक्षा कराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

संसार सागर से, खुद को है तारा।
प्रभु हमको तारो, मैं आया हूँ द्वारा।।
श्री वासुपूज्य की, पूजा रचाऊँ।
हरो कर्म मेरे, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।।१६।।

ॐ ह्रीं संसार सागर पाराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जनम नाश दीना, अजन्मा हुये हैं।
हम भक्त तुम्हारें, चरण को छुये हैं।।
श्री वासुपूज्य ....।।१७।।

ॐ ह्रीं जन्म रहित सुख प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

चारित ध्वजा ले, जगत में उड़ायी।
दया धर्म की गंगा, जग में बहायी।
श्री वासुपूज्य ....।।१८।।

ॐ ह्रीं दयाध्वज प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

वचन काय मन से है, आतम को ध्याया।
बने आत्म योगी, सिद्ध पदवी को पाया।
श्री वासुपूज्य ....।।१९।।

ॐ ह्रीं योगी पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

करी थी तपस्या, करम सब ही काटे।
बनी शुद्ध आतम, निजातम को साधे।।
श्री वासुपूज्य ....।।२०।।

ॐ ह्रीं शुद्ध अवस्था प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

परम् ब्रह्म तत्व के, ज्ञाता हुये हो।
परमज्ञान धारी, निजातम छुये हो।
श्रीवासुपूज्य ....।।२१।।

ॐ ह्रीं परम् तत्व ज्ञाताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अतिशय हो ज्ञानी, अतिशय तपस्वी।
किये कार्य सिद्ध, बने हो यशस्वी।।
श्रीवासुपूज्य............।।२२।।

ॐ ह्रीं सर्व कार्य सिद्धाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अजर हो प्रभु तुम, बुढ़ापा न आये।
संसारी हैं हम, बुढ़ापा सताये।।
श्रीवासुपूज्य ....।।२३।।

ॐ ह्रीं अजर अवस्था प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

परम दिव्य आतम, परम शांति पाई।
जिसने तुम्हें पूजा, ज्योति जगाई।।
श्रीवासुपूज्य ....।।२४।।

ॐ ह्रीं परम दिव्य आतम प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

धरम के हो अध्यक्ष, सब तुमको माने।
झुकाये तुम्हें सिर, परम देव जाने।।
श्री वासुपूज्य... ।।२५।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्ष पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

महा मोह माया से पीछा छुड़ाया।
हुए मुक्त इनसे, औ सिद्धालय पाया।।
श्री वासुपूज्य...............।।२६।।

ॐ ह्रीं मुक्ति सुख प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सदा ध्यान करते, न बाधायें आयें।
ये बाधायें हमको, प्रभु जी सतायें।।
श्री वासुपूज्य.............।।२७।।

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

महाशक्ति धारी, महाध्यान करते।
हमें शक्ति दो नाथ, दुःखों को हरते।
श्री वासुपूज्य की, पूजा रचाऊँ।
हरो कर्म मेरे, मैं अर्ध्य चढ़ाऊँ।।२८।।

ॐ ह्रीं महाशक्ति प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

धर्मतीर्थ का तुमने, निर्माण कीना।
धर्म बांटते हो, धरम सबको दीना।।
श्री वासुपूज्य ....।।२९।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ कृते श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

सभी लोक कालों को, इक साथ जानो।
झलके ज्यों दर्पण में, वही तो है मानों।।
श्री वासुपूज्य ....।।३०।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाता पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

तुम्हीं श्रेष्ठ जग में, निजातम को पाया।
निजातम को पाने को, भक्त ये आया।।
श्री वासुपूज्य ....।।३१।।

ॐ ह्रीं श्रेष्ठ पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शेरचाल

(तर्ज दे दी हमें आजादी)

निज आतम के वैभव को, पा धनी बने।
न छीन सके कोई सब, कर्म को हने।।
जीवन की संध्या डूबती, उद्धार करो नाथ।
भटका हुआ संसार में, मुझको दिखाओ पाथ।।३२।।

ॐ ह्रीं आत्म वैभव प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

हो ज्ञानवान बुद्धिमान, बुद्धिदान दो।

अज्ञानी हूँ बालक समान, ज्ञान दान दो।।
जीवन की संध्या............।।३३।।

ॐ ह्रीं शुभ सुधी प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

कर्मों का मैल धो दिया, निर्मल हुये हैं आप।
ये भक्त मैल धो रहे, करते तुम्हारा जाप।
जीवन की संध्या............।।३४।।

ॐ ह्रीं निर्मल आत्म प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिया, अमर भी हो गये।
हमको पिलाओ नाथ, धन्य हम भी हो गये।।
जीवन...........।।३५।।

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

कर्मों की बेड़ी तोड़ी तो, स्वतंत्र हुए आप।
करके तपस्या आत्मा का, दूर किया ताप।।
जीवन...........।।३६।।

ॐ ह्रीं स्वतंत्रता प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मृत्यु पे विजय करके, मृत्युंजयी बने।
जा सिद्धशिला पे विराजे, सौख्य हैं घने।।
जीवन............।।३७।।

ॐ ह्रीं महामृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

आतम का सौख्य पाके, प्रसन्न हो गये।
ना शोक है ना दुःख है, संपन्न हो गये।।
जीवन..............।।३८।।

ॐ ह्रीं प्रसन्न आत्म कराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

निज आत्मा का ध्यान, तुमने ऐसा लगाया।
चहुँ ओर शांति-शांति छाई, शान्त बनाया।।
जीवन की संध्या डूबती, उद्धार करो नाथ।
भटका हुआ संसार में, मुझको दिखाओ पाथ।।३९।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पुण्यों की वर्षा आपके चरणों में होती है।
जो चरण शरण पाये, पुण्यों के मोती हैं।।
जीवन..................।४०।।
ॐ ह्रीं पुण्य वर्षा कराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

संसार के सब गुण तुम्हारे, चरणों में आये।
नायक बनाया आपको, बस आप ही भाये।।
जीवन...........।४१।।
ॐ ह्रीं गुण नायकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

निर्मोही बने प्रभु तुम, मोह ना करो।
मोहा है सारे जग को तुमने, मोह को हरो।।
जीवन..........।४२।।
ॐ ह्रीं निर्मोहाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

अकलंक हो निकलंक हो, कलंक से रहित।
प्रभु शुद्ध हैं विशुद्ध हैं, धर्म से सहित।।
जीवन की संध्या ....।४३।।
ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पावन तुम्हारा नाम, सबको शांति देता है।
मन उसका हो पवित्र, जो भी नाम लेता है।।
जीवन...............।४४।।
ॐ ह्रीं पावन मन प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

शुभ लक्षणों वाले तुम्हारा, तन भी है महान्।
होवे वहां शुभ-शुभ हमेशा, शुभ तुम्हारा धाम।।
जीवन...............।४५।।
ॐ ह्रीं शुभ लक्षण प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

करके तपस्या महा तेज, प्राप्त कर लिया।
कर्मों की सेना को भगा के, मोक्ष वर लिया।।
जीवन...............।४६।।
ॐ ह्रीं महातेज प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

त्रिलोक की सम्पत्ति तो, चरणों की दास है।
महासंपदा के स्वामी तुम तो, मुक्ति वास है।।
जीवन.............।४७।।
ॐ ह्रीं महासंपदा प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जिन देव तुम तो महादान, देते हो सदा।
जो भक्त पाये उनके मन को, मिलती है मुदा।।
जीवन............।४८।।
ॐ ह्रीं महादानाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

आनंद मिला आपको जब, आत्म को ध्याया।
अध्यात्म लीन हो गये, निज आत्म को पाया।।
जीवन.............।४९।।
ॐ ह्रीं परमानंदाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

संसार सारा क्रोध से, खुद को सताता है।
जित क्रोधी प्रभु आप, भक्त सौख्य पाता है।
जीवन की संध्या डूबती उद्धार करो नाथ।
भटका हुआ संसार में, मुझको दिखाओ पाथ।।५०।।
ॐ ह्रीं जित क्रोधाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

प्रभु आपका शासन तो, आत्मा पे चलता है।
जो भक्त शरण आये, उनका ज्ञान बढ़ता है।
जीवन .... ।।५१।।

ॐ ह्रीं अमित शासनायश्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

करते कलेश लोग औ, सबको सताते हैं।
हो जित क्लेश आप, राह सच दिखाते हैं।।
जीवन............ ।।५२।।

ॐ ह्रीं क्लेश रहित सुख प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

प्रभु आपके शरण में रहें, मोक्ष मिलेगा।
ज्ञान मिले, ध्यान मिले, फूल खिलेगा।।
जीवन........ ।।५३।।

ॐ ह्रीं अमित शरणा प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

उत्तम हो प्रभु आप शरण, तेरी आये हैं।
भक्ति करें, अर्चन भी, तेरे गीत गाये हैं।
जीवन......... ।।५४।।

ॐ ह्रीं उत्तमाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

प्रभु इष्ट है विशिष्ट है, महान भी तुम्हीं।
भक्तों के हो भगवान, और ज्ञानवान भी।
जीवन............ ।।५५।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट ज्ञान प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

ज्ञान का भोजन किया और, ज्ञान का पानी।
आतम को किया तृप्त, यही धर्म कहानी।।
जीवन.......... ।।५६।।

ॐ ह्रीं सदातृप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

तप की औषधि को खाके, रोग रहित हो।

है स्वस्थ आत्म तेरा, प्रभु-मुक्ति सहित हो।।
जीवन........ ।।५७।।

ॐ ह्रीं उत्तम स्वास्थ्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मनवांछा करते पूर्ण दर जो, भक्त आता है।
हो कल्पवृक्ष आप, भक्त सौख्य पाता है।।
जीवन......... ।।५८।।

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जिसने भी प्रभु ध्यान कीना, उसे वर दिया।
सच्ची करे जो भक्ति, उनके दुःख को हर लिया।।
जीवन.......... ।।५९।।

ॐ ह्रीं कामना पूर्ण वर प्रदाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

चित्त उनका शांत हो, जो नाम लेता है।
जो भक्ति करे वो तो, अपनी नाव खेता है।
जीवन......... ।।६०।।

ॐ ह्रीं चित्त शांति प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मैं जन्म-जन्म भक्त रहूँ, भावना मेरी।
मिले जन्म-जन्म चरण शरण, कामना मेरी।।
जीवन......... ।।६१।।

ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

मिश्री घुले कानों में, ऐसी वाणी मैं पाऊँ।
मैं अशुभ वचन छोड़ूँ, वाणी शुद्ध कराऊँ।।
जीवन.......... ।।६२।।

ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

धर्म की छाया में बैठ, शांति मिलती है।
हो शांति-शांति-शांति मन की कलियां खिलती हैं।।
जीवन की संध्या डूबती, उद्धार करो नाथ।
भटका हुआ संसार में, मुझको दिखाओ पाथ।।६३।।

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पुरूषार्थ करूँ पर सफलता, हाथ न आती।
आशीष तेरा मुझको मिले, बात ये भाती।।
जीवन..........।।६४।।

ॐ ह्रीं पुरूषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभू)

कभी नर्क गया कभी स्वर्ग गया, तिर्यच के चक्कर खाये हैं।
गतियों में घूम-घूम कर प्रभु, अब शरण तिहारी आये हैं।।
हे वासु पूज्य भगवान मेरे, अब भक्ति गीत को गाते हैं।
श्रद्धा से अर्घ्य बना लाये, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं चौंसठ गुण प्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा।

जापः - ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला (त्रिभंगी छंद)

हो कर्म के हर्ता, मुक्ति भर्ता, अविनाशी पद पाया है।
हो शुद्ध निरंजन, कर्म का भंजन, कर आतम हर्षाया है।।
विद्या के स्वामी, हम अनुगामी, पाने को पूजा करते।
आनंद प्रदाता, सब सुख दाता, कर्म सभी के हैं हरते।।

शंभू छंद

जय वासुपूज्य जय वासुपूज्य, जय वासुपूज्य हम करते हैं।
प्रभु नाम महासुखकारी है, कर्मों को अपने हरते हैं।।
है नमन-नमन, है नमन-नमन, हम नमन सदा ही करते हैं।
तेरे चरण-चरण तेरे चरण-चरण, चरणों में मस्तक धरते हैं।।१।।
चरणों की छांव में तेरी रहें, इसलिए भक्त पूजा करता।
संसार मोह की माया है, इससे छूट भव दुख हरता।।
हे सिद्ध शुद्ध हे परम बुद्ध, मैं क्रोध कषायें करता हूँ।
फिर कष्ट मिले और दुःख मिलें, पछताता और फिर रोता हूँ।।
स्वारथ की दुनिया है सारी, मैनें प्रभु इसको देख लिया।
अब जगत छोड़ शरण तेरी, पाना है मन में धार लिया।।
कल्याणक पंच तुम्हारे प्रभु, देवों ने आन मनाये थे।
शुभ गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, सुर नर खुशियों को पाये थे।।३।।
चंपापुर नगरी भाग्यवान, पांचों कल्याणक वहाँ हुऐ।
नर नारी ने सब कुछ देखा, हर्षित-हर्षित सब हृदय हुऐ।।
कल्याणक जन्म मनाने को, पांडुक वन में ले जाते हैं।
औ सहस्त्र आठ कलशों द्वारा, प्रभु जी का न्हवन कराते हैं।।४।।
बचपन में सभी खिलाते थे, और देख-देख खुश होते थे।
कभी इस गोदी कभी उस गोदी, लेकर के उन्हें झुलाते थे।।
जिन-जिन ने आंखों से देखा, उनकी आंखे तो धन्य हुई।
जिन-जिन ने तेरा बदन छुआ, तन रोगी उनका नहीं हुआ।।५।।
भर यौवन में दीक्षा लीना, शादी बरबादी नहीं करे।
तज काम क्रोध और लोभ मोह, संसार चक्र में नहीं फंसे।
संसार का बंधन बांधा ना, संसार तुम्हें ना भाया था।
सुख समता नीर बहाने को, मन मुक्ति पथ हर्षाया था।।६।।
अनुपम अखंड आतम को ध्या, आतम की गहराई जानी।

तुम बूंद नहीं सागर बनकर, आतम की बात ही थी मानी।।
तन में यह कैद जो आतम है, मुक्ति अब इसे दिलाना है।
कर्मों के बादल उड़ा-उड़ा, निज से निज को ही मिलाना है।।७।।
घनघोर तपस्या कर करके, चारों घाती को नाश दिया।
केवल का सूर्य वहां प्रगटा, उजियाला चारों ओर हुआ।।
समवशरण तब रचना हुई, सुर नर पशु शरणा आये थे।
सुन दिव्य ध्वनि तेरी वाणी, पा सब आतम हर्षाये थे।।८।।
कुछ मुनि बने कुछ आर्यिका भी, कुछ ने अणुव्रत धारण करें।
सबने उद्धार किया अपना, चरणों में आये भक्त घने।।
मुक्ति का समय जब आया तो, आठ कर्मों को नाश दिया।
मुक्ति में नाथ गये स्वामी, मुक्ति का तुमने वरण किया।।९।।
चिंतन प्रभु हम तेरा करते हैं, मेरे चित्त में आकर तुम रहना।
हम भी मुक्ति अनुगामी बनें, बस इतना सा मेरा कहना।।१०।।

दोहा

दुनिया का रंग न चढ़े, भक्ति रंग चढ़ायें।
वासु पूज्य भगवान की, पूजा भक्ति रचायें।।
ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

आतम का उत्थान हो, आतम का कल्याण।
"स्वस्ति" की है भावना, बारंबार प्रणाम।।
परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

इति विधान संपूर्ण